Research Paper | Literature | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 4 | Issue : 1 | Jan 2018

# GRAMIN PRAWASI KRASHAK PRIVARON DWARA MOUSHAMI STHANANTARAN KI AVADHI ME KARYAN KI PRAVRATTI KA ADHAYAYAN [SEONI JILE KE SANDRABH ME]

# ग्रामीण प्रवासी कृषक परिवारों द्वारा मौसमी स्थानांतरण की अवधि में कार्यों की प्रवत्ति का अध्ययन (सिवनी जिले के विशेष संदर्भ में)

Dr. Pratima Wasnik

H- 4, Modal School Campus, Barwani, Madhya Pradesh-451551.

## ABSTRACT

प्रवास को विभिन्न विशेषज्ञों ने विभिन्न तरीके से परिभाषित किया है। सामान्यतः लोगों का व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से निश्चित दूरी पर अपने निवास स्थान का स्थायी अथवा अर्द्ध–स्थायी हो सकता है। वर्तमान में भूगोलज्ञों ने जनसंख्या की गतिशीलता तथा प्रवास से जुड़ी समस्याओं पर ध्यान दिया है एवं उनकी जांच शुरू की है। समय के आधार पर प्रवास अस्थायी या स्थायी होता है। दूरी के परिपेक्ष्य में यह दूर अथवा पास होता है। संख्या के आधार पर यह व्यक्तिगत अथवा सामूहिक हो सकता है। यह राजनीति द्वारा प्रायोजित अथवा स्वैच्छिक हो सकता है तथा कारणों के आधार पर यह आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक हो सकता है तथा प्रवास चरणों में या तात्कालिक हो सकता है।[1]

**KEYWORDS:** प्रवास, गतिशीलता, दूरी.

### परिचय (INTRODUCTION):

विकसित देशों में जीविकोपार्जन हेतु श्रम शक्ति मुख्यतः कृषि और उद्योग दो क्षेत्रों में कार्यरत् रहती है। दोनों ही क्षेत्रों में कार्यरत् श्रम–शक्ति स्थाई होती है। फलस्वरूप श्रम संगठन भी स्थायी, प्रभावपूर्ण एवं शक्तिशाली होते हैं और उनके द्वारा राष्ट्र और व्यक्ति दोनों के आर्थिक हितों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। किन्तु भारतीय परिवेश में श्रम शक्ति का विकास स्थायी रूप से नहीं हो पाया है। अधिकांश श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों के निवासी हैं और औद्योगिक शहरों में अपनी आर्थिक परिस्थितियों के कारण कार्य करने के लिए आते हैं, न तो शहर उन्हें अपना पाता है और न ही वे शहर को अपना पाते हैं। फलतः इन दोनों में पारस्परिक दूरी बनी रहती है। इसलिए अधिकांश श्रमिक अपने स्थाई ग्रामीण परिवार की ओर आकर्षित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया चलती रहती है और स्थायी श्रम–शक्ति का विकास नहीं हो पाता है। विश्व के अनेक विकासशील देशों की भांति हमारे देश के भी अधिकांश श्रमिक वर्ष में कुछ समय औद्योगिक कार्य में लगाते हैं तथा कुछ समय गाँवों की परम्परागत कृषि में। इस प्रकार उन्हें अपने तथा अपने परिवार की उदरपूर्ति हेतु कई समस्याओं को झेलना पड़ता है। शाही आयोग के अनुसार श्रम की प्रवासी प्रवृत्ति की प्रेरणा समुदाय के बिल्कुल आखिरी किनारे अर्थात् गाँवों से आती हैं और श्रमिक को शहरी जीवन का कोई प्रलोभन या आकर्षक नहीं होता है। जब वह अपना गाँव छोड़ता है, तो उसे हृदय में जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्रवास करने के अतिरिक्त कोई उच्च अभिलाषा नहीं होती। यदि उन्हें गाँव में ही पर्याप्त भोजन एवं वस्त्र प्राप्त हो जाता है, तो बहुत ही कम औद्योगिक श्रमिक शहरों में रहना पसंद करते हैं। वे शहर जाने के लिए आकर्षित नहीं वरन् बाध्य होते हैं। भारतीय श्रमिक का हृदय गाँवों में निवास करता है। ग्रामीण परिवार में पुनः जाने की प्रबल इच्छा उनमें सदैव बनी रहती है। बढ़ती जनसंख्या और घटती हुई भूमि, भूमि का असमान वितरण तथा सिंचाई के साधनों का अभाव कृषि क्षेत्र में रोजगार सृजन में कमी करता जा रहा है। ग्रामीण कृषक परिवारों एवं कृषि मजदूरों को अब बड़ी मुश्किल से वर्ष में 3 या 4 महिने का ही रोजगार मिल पाता है और कृषि में संलग्न कृषक परिवार अब अपने जीवन–यापन के लिए अन्यत्र कार्य करने जाने लगे हैं। इस दृष्टिकोण से वे अपना कृषि कार्य समाप्त करके मौसमी प्रवास करने को मजबूर होने लगे हैं।

### शोध समस्या का चयन (SELECTION OF RESEARCH PROBLEM):

ग्रामीण क्षेत्र में कार्य का अभाव एवं अल्पकार्य जैसी स्थितियों के कारण ही कृषक परिवार मौसमी प्रवास का सहारा लेते हैं। प्रवास करने वाले परिवार मौसमी प्रवास के स्थान पर कौन–कौन से कार्य में संलग्न होते है? प्रवास का समय (महिना) कौन–सा होता है ? मौसमी प्रवास के स्थान पर मजदूरी कम मिलती है या अधिक मिलती है। इन महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही **''ग्रामीण प्रवासी कृषक परिवारों द्वारा मौसमी स्थानांतरण की अवधि में कार्यों की प्रवत्ति का अध्ययन'' (सिवनी जिले के विशेष संदर्भ में)** नामक शोध समस्या का चयन किया गया है।

### अध्ययन के उद्देश्य (OBJECTIVE OF STUDY):

1. प्रवास करने वाले कृषक परिवारों द्वारा मौसमी स्थानान्तरण के स्थान पर किए जाने वाले कार्यों का अध्ययन करना।

2. प्रवासित परिवारों पर मौसमी स्थानान्तरण के समय एवं प्राप्त होने वाली मजदूरी की स्थिति का अध्ययन करना।

### अध्ययन का महत्व (IMPORTANT OF STUDY):

मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में प्रमुख रूप से अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के लोग निवास करते हैं और ये समस्त वर्ग कृषि कार्य में तुलनात्मक रूप से अधिक संलग्न है। समय एवं परिस्थितियों के बदलने के साथ–साथ कृषक परिवारों के सामने अनेक समस्याएँ उत्पन्न होने लगी है। जिसके कारण या आजीविका की तलाश में कृषक परिवार शहरों या नगरों की ओर स्थानांतरित होते हैं। प्रवासित कृषक परिवारों के सदस्यों द्वारा मौसमी प्रवास या स्थानांतरण के स्थान पर कौन सा कार्य किया जाता है और प्रवास का उपयुक्त समय कौन सा होती है? इसके साथ ही उन्हे प्रवास वाले स्थान पर कितनी मजदूरी मिलती है। इन महत्वपूर्ण बिन्दुओं से संबंधित यह अध्ययन प्रवास करने वाले लोगों के विकास में महत्वपूर्ण साबित होगा है।

### निदर्शन प्रक्रिया (SAMPLING PROCESS):

अध्ययन के समग्र (Univers of study) के रूप में सिवनी जिले के कुल गाँवों में से 15 गाँवों का चयन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर सोद्देश्य प्रतिचयन विधि[2] से किया गया है। इन गाँवों में से सर्वाधिक कृषक परिवारों द्वारा प्रवास किया जाता है। इन चयनित कुल गाँवों मे से प्रत्येक गाँव से 30 कृषक परिवारों का चयन तीन स्तरों पर स्तरीकृत निदर्शन विधि[3] किया गया है। इन स्तरों में प्रथम स्तर पर अनुसूचित जाति के कुल कृषक परिवारों में से 10 कृषक परिवारों का चयन दैव निदर्शन पद्धति[4] से किया गया है तथा द्वितीय स्तर पर अनुसूचित जनजाति के कुल कृषक परिवारों में से 10 कृषक परिवारों एवं इसी प्रकार से तृतीय स्तर पर अन्य पिछड़ा वर्ग के कुल कृषक परिवरों में से 10 कृषक परिवारों का चयन किया गया है। कुल 15 गाँवों में से 150 अनुसूचित जाति, 150 अनुसूचित जनजाति एवं 150 अन्य पिछड़ा वर्ग के कृषक परिवारों का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 15 गाँवों से 450 कृषक परिवारों (15 X 30) का चयन अध्ययन की इकाई(न्दपज वf जिनकल) के रूप में किया गया है।

### समंक संकलन के स्त्रोत (SOURCE OF DATA COLLECTION):

इस अध्ययन हेतु प्राथमिक आँकड़ों (Primary data) का संकलन का साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन, समूह चर्चा आदि के माध्यम से किया गया है तथा द्वितीयक समंकों (मबवदकंतल कंजं) का संकलन विभिन्न मानक पुस्तकों, शोध प्रबंध, संदर्भित पुस्तकों, शोध–पत्रों, जिला गजेटियर पुस्तक, जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, भारतीय जनगणना, विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय कार्यालयों के प्रतिवेदनों, सरकारी समितियों के प्रतवेदनों आदि के माध्यम से किया गया है।

### अध्ययन के निष्कर्ष (FINDINGS OF STUDY):

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न प्रकार है–

1. मौसमी प्रवास वाले स्थान पर कार्य की प्रकृति के संबंध में प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 39 प्रतिशत कृषक परिवार प्रवासित स्थान पर कृषि मजदूरी करते हैं तथा लगभग 61 प्रतिशत अन्य कार्यों में संलग्न होते हैं। इन अन्य कार्यों के अन्तर्गत उद्योग क्षेत्र, निर्माण कार्य, गन्ना मिल, टाइल्स बनाना, पत्थर तोड़ना, घरेलू कार्यों में संलग्न होना, ठेला चलाना, चाय या पान की दुकान में कार्य करना शामिल है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रवास करने वाले सर्वाधिक कृषक परिवार अपने प्रवासित स्थान पर विभिन्न प्रकार के आर्थिक कार्य करके अपने परिवार के पालन पोषण में योगदान देते हैं। वहीं दूसरी ओर शेष कृषक परिवार कृषि मजदूर के रूप में कार्य करके भी अपना योगदान देते हैं। इस प्रकार ज्यादातर कृषक परिवार अन्य कार्यों में ही संलग्न होते हैं।

2. प्रवास करने वाले कृषक परिवारों के प्रवास के मौसम के संबंध में प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक कृषक परिवार जनवरी से मार्च के महिने में

अपने गाँव को छोड़कर अन्यत्र प्रवास करते हैं। जबकि दूसरी ओर 31 प्रतिशत से अधिक कृषक परिवार अप्रैल एवं जून माह के दौरान मौसमी प्रवास करते हैं। कुछ कृषक परिवार (2.90:) अक्टूबर–दिसम्बर माह में भी प्रवास करते हैं। इस प्रकार इस विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सर्वाधिक कृषक परिवार अपनी स्वयं की खेती का कार्य समाप्त होने के पश्चात् प्रवास पर जाते हैं, ताकि अपने आर्थिक स्तर को बनाये रखा जा सके।

3. प्रवास वाले स्थान पर मजदूरी की राशि प्राप्त होने के संबंध में प्राप्त आँकड़ों के संबंध में स्पष्ट है कि लगभग 60 प्रतिशत कृषक परिवारों ने इस बात को स्वीकार किया है कि उन्हें प्रवास वाले स्थान पर मजदूरी की मिलने वाली राशि उनके गाँवों की तुलना में अधिक मिलती है। इसके विपरीत 40 प्रतिशत कृषक परिवारों के अनुसार उन्हें प्रवास वाले स्थान पर अधिक मजदूरी नहीं मिलती है। इस प्रकार इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि मौसमी प्रवास पर जाने वाले अधिकांश कृषक परिवारों को अपने प्रवास स्थान पर मजदूरी की राशि अपने गाँवों की तुलना में अधिक मिलती है। दूसरी ओर कुछ कृषक परिवारों को मजदूरी की राशि तो अधिक नहीं मिलती है, परन्तु फिर भी वे गाँवों में काम का अभाव, समय पर काम न मिलना तथा अपर्याप्त काम मिलने पर गाँव छोड़कर अन्यत्र प्रवास करते हैं, जो उनकी विवशता को भी स्पष्ट करता है।

**उपसंहार (CONCLUSION):**

उक्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट है कि मौसमी स्थानांतरण करने वाले परिवारों के सदस्यों द्वारा प्रवासित स्थान पर विभिन्न कार्य करके अपने परिवार का पालन–पोषण किया जाता है और वे प्रवासित स्थान पर कम मजदूरी पर भी काम करते है।

**संदर्भ (REFERENCES):**


1. मोहन, अरविंद (1998), प्रवासी मजदूरों की पीड़ा, राधाकृष्णन प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ. 12
2. Sharma, S.K. (1990), Universe of Knowledge & Research Methodology, Printwell Publishing House, Jaipur
3. सिंह, श्याम (1982), वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, कमल प्रकाशन, इन्दौर पृ. 278–79.
4. Shing, Jaspal (1991), Introduction to Methods of Social Research, Sterling Publications Pvt. Ltd., New Delhi, P-44